CODE NO : 60-

395

विषय : "सागर में लहरें क्यों उमड़ रही हैं"

जीवन अमर है

विशाल है सागर, जैसे बिछा हुआ आसमान,
बादलों को है, उसमें समा जाने की अरमान।
साँस लेते जान से भरी है उसकी गहराई,
कभी तैरता है उसमें आसमान की परछाई।

उमड़ती लहरों को है, सागर तट से प्यार
हमेशा उसे सहलाने आता, वह सच्चा यार।
धूप ढल जाती है, रात भी सो जाती है
सागर की लहरें तो, हर समय लहराती है।

देर तक देखती रही मैंने वह नज़ारा
कर रहा था वह, सच्चाई के ओर इशारा।
सही है, प्रकृति ही सिखाती है हर सबक
समझती है वह माँ, संसार की धड़क।

उमड़ता है संसार में, जीवन का लहर
धरती को ज़िंदा रखता, वह खूबसूरत सफ़र।
रोज़ नया जीवन का होता है उदय
भले ही उसे चुरा लेता है समय।

कभी कभी, धरती में मचता है तूफ़ान
जिसमें खो जाते है, कई सारे जान।
कभी बहुत नाराज़ होते है मौसम
जो देता धरती में हर किसीको ग़म।

बारिश और धरती का रिश्ता है गहरा
पर बदलता है, वह भी अपना चेहरा।
तब डूब गया था, लाखों जीवन
तडप रहा था, ज़िंदा रहने केलिए जान।

जितने भी डरावनी हो, यह विनाश
कभी होता नहीं, जीवन का सर्वनाश।
कभी होगा, सब खतम होने की एहसास
पर रुकते नहीं इस धरती की साँस।

जब भी होता, तबाही का अंधकार से मुलाकात
नए जीवन का सुबह से, फिर से होता शुरुआत।
कभी लूट नहीं सकता, जीवन को मौत
सुबह होता ही है, अंत करने को रात।

समय बहुत हो चुका था, मुझे जाना था,
उन उमड़ती लहरों से अलविदा कहना था,
आ गया, लालिमा के साथ साँझ
मन में अपनाया, सागर से सीखी साँच।

संसार है, एक खूबसूरत विशाल सागर
जीवन की लहरें यहाँ रहते हैं अमर।
ज़िंदगी कभी पूरी तरह खो न जाते हैं
क्योंकि लहरें भी हमेशा, वापस लौटते हैं।

x ——— x